A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320-7175 (O) | Volume 14, Issue 02, April 2026 (Special Issue)

This paper was presented at the 'Swar Sanskar National Seminar', organized by Swar Sanskar Sangeet Gurukul
Seminar Convener: Dr. Yash Sanjay Dewale (Co-Founder: Swar Sanskar Sangeet Gurukul, Assistant Professor: MSU Baroda)

भारतीय संगीत शिक्षा में परंपरा और आधुनिकता का संतुलन

Janakkumar Tribhuvanbhai Jasakiya
Assistant Professor, The Maharaja Sayajirao University of Baroda, Vadodara
Dr. Yash Dewale
Assistant Professor, The Maharaja Sayajirao University of Baroda, Vadodara

Read the Article Online

OPEN ACCESS

Published on 30 April, 2026

सार

भारतीय संगीत शिक्षा की परंपरा विश्व की प्राचीनतम और समृद्ध शिक्षण परंपराओं में से एक मानी जाती है, जिसकी आधारशिला गुरु-शिष्य परंपरा पर टिकी हुई है। इस परंपरा में संगीत केवल एक कला नहीं, बल्कि साधना, आध्यात्मिक अनुभूति और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का माध्यम रहा है। शिष्य अपने गुरु के सान्निध्य में रहकर न केवल राग, लय और ताल की शिक्षा ग्रहण करता था, बल्कि संगीत के सूक्ष्म भाव, नैतिक मूल्य, अनुशासन और जीवन-दृष्टि को भी आत्मसात करता था। इस प्रकार की शिक्षा गहन, अनुभवात्मक और व्यक्तित्व निर्माण पर आधारित होती थी।

समय के साथ सामाजिक, शैक्षिक और तकनीकी परिवर्तनों ने संगीत शिक्षा के स्वरूप को प्रभावित किया। आधुनिक युग में विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों और विभिन्न संस्थानों के माध्यम से संगीत शिक्षा को एक संगठित और संरचित रूप मिला है। इसके साथ ही डिजिटल तकनीक, ऑनलाइन शिक्षण और वैश्विक संचार ने संगीत को अधिक सुलभ और व्यापक बना दिया है।

हालाँकि, इस परिवर्तन के कारण पारंपरिक प्रणाली की गहराई, व्यक्तिगत मार्गदर्शन और साधना की निरंतरता में कमी जैसी समस्याएँ भी सामने आई हैं। आधुनिक शिक्षा में परीक्षा-केंद्रित दृष्टिकोण, व्यावसायीकरण और सतही ज्ञान की प्रवृत्ति भी देखी जाती है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य भारतीय संगीत शिक्षा में परंपरा और आधुनिकता के बीच संबंधों का विश्लेषण करना, उनकी विशेषताओं और सीमाओं को स्पष्ट करना तथा दोनों के मध्य संतुलन स्थापित करने के व्यावहारिक उपाय प्रस्तुत करना है।

बीज शब्द: भारतीय संगीत, गुरु-शिष्य परंपरा, आधुनिक संगीत शिक्षा

1. प्रस्तावना

भारतीय संगीत, भारतीय संस्कृति की आत्मा का प्रतिबिंब है, जो केवल मनोरंजन का साधन न होकर आध्यात्मिक अनुभूति और भाव-अभिव्यक्ति का माध्यम भी है। प्राचीन काल से ही संगीत को 'नाद-ब्रह्म' की संज्ञा दी गई है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि भारतीय चिंतन में संगीत का स्थान अत्यंत उच्च रहा है। इसी कारण इसकी शिक्षा पद्धति भी सामान्य शिक्षा से भिन्न और विशिष्ट रही है।

प्रारंभिक काल में संगीत शिक्षा का प्रमुख आधार गुरु-शिष्य परंपरा थी, जिसमें शिष्य अपने गुरु के साथ रहकर दीर्घकाल तक साधना करता था। इस प्रणाली में शिक्षा का स्वरूप व्यक्तिगत, लचीला और अनुभवपरक था। गुरु शिष्य की क्षमता, प्रवृत्ति और रुचि के अनुसार उसे शिक्षा प्रदान करता था, जिससे प्रत्येक शिष्य का विकास उसकी अपनी गति और शैली में होता था। परंतु आधुनिक काल में औपचारिक शिक्षा प्रणाली के विकास के साथ संगीत शिक्षा भी संस्थागत रूप में परिवर्तित होने लगी। विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में संगीत विषय को शामिल किया गया, जिससे यह अधिक व्यापक और सुलभ बन गया। साथ ही, पाठ्यक्रम, परीक्षा और प्रमाणपत्र आधारित प्रणाली ने संगीत शिक्षा को एक व्यवस्थित ढाँचा प्रदान किया।

वर्तमान समय में तकनीकी विकास ने संगीत शिक्षा को एक नई दिशा दी है। ऑनलाइन कक्षाएँ, डिजिटल प्लेटफॉर्म, ऑडियो-वीडियो माध्यम और वैश्विक संचार के कारण विद्यार्थी कहीं भी रहकर संगीत सीख सकते हैं। यह परिवर्तन अवसरों के नए द्वार खोलता है, किंतु इसके साथ ही यह प्रश्न भी उठता है कि क्या इस प्रक्रिया में पारंपरिक गहराई और आत्मीयता कहीं खोती जा रही है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि हम परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन स्थापित करें, ताकि संगीत शिक्षा न केवल व्यापक और सुलभ बने, बल्कि उसकी गुणवत्ता, गहराई और सांस्कृतिक मूल्यों की भी रक्षा हो सके।

2. पारंपरिक संगीत शिक्षा: गुरु-शिष्य परंपरा का विस्तृत स्वरूप

आसान शब्दों में संगीत को "ऐसी मधुर ध्वनि जो कानों को प्रिय लगे और मन को आनंद दे" कहा जा सकता है। ध्वनि का अनुभव हम कर्णेन्द्रिय यानी कानों के माध्यम से करते हैं, इसलिए संगीत का सीधा संबंध श्रवण से है। जैसे चित्रकला को आँखों से देखा जाता है और शिल्पकला का अनुभव स्पर्श या दृष्टि से होता है, उसी प्रकार संगीत का आस्वादन केवल कानों द्वारा ही संभव है। इसी कारण संगीत शिक्षा को "गुरुमुखी" या "मौखिक" परंपरा का हिस्सा माना गया है।

गुरुमुखी विद्या का अर्थ है वह ज्ञान जो गुरु अपने शिष्य को मौखिक रूप से प्रदान करता है। प्राचीन भारत में गुरु-शिष्य परंपरा सभी विद्याओं में प्रचलित थी, जिसे गुरुकुल प्रणाली कहा जाता है। इस प्रणाली ने हमारी सांस्कृतिक परंपरा को संरक्षित रखते हुए अनुशासन, श्रद्धा और नैतिक मूल्यों का विकास किया। संगीत में "घराना" परंपरा भी महत्वपूर्ण है, जहाँ कोई विशिष्ट गुरु अपनी शैली में शिष्यों को प्रशिक्षित करता है और अपनी परंपरा को आगे बढ़ाता है। यह गुरुकुल परंपरा का ही विकसित रूप है।

गुरु के सान्निध्य में रहकर शिष्य मौखिक रूप से संगीत सीखता है। यह प्रक्रिया निरंतर अभ्यास और अनुशासन पर आधारित होती है, जिसे साधना कहा जाता है। जैसे सूर्य के प्रकाश से बीज एक वृक्ष बनता है, वैसे ही गुरु के मार्गदर्शन से शिष्य एक कुशल कलाकार बनता है, बशर्ते उसमें श्रद्धा, समर्पण और अनुशासन हो। यद्यपि संगीत से संबंधित ग्रंथ, पुस्तकें और नोटेशन महत्वपूर्ण हैं, फिर भी व्यावहारिक ज्ञान के लिए गुरु के सान्निध्य में सीना-बसिना शिक्षा को ही सर्वोत्तम माना गया है।

सीमाएँ:

- हालाँकि यह प्रणाली अत्यंत प्रभावी थी, फिर भी इसकी कुछ सीमाएँ थीं।
- यह शिक्षा सभी के लिए सुलभ नहीं थी, क्योंकि शिष्य को गुरु के पास रहना पड़ता था।
- इसमें औपचारिक प्रमाणपत्र का अभाव था, जिससे रोजगार के अवसर सीमित हो जाते थे।
- शिक्षा का प्रसार सीमित दायरे तक ही रहता था।

3. आधुनिक संगीत शिक्षा प्रणाली

आधुनिक युग में संगीत शिक्षा को विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों के माध्यम से संगठित रूप प्रदान किया गया है, जिससे इसे एक व्यवस्थित और संरचित ढाँचा प्राप्त हुआ है तथा यह अधिक व्यापक स्तर पर समाज के विभिन्न वर्गों तक पहुँच सकी है। अब विद्यार्थियों को गुरु के साथ निवास किए बिना भी संगीत सीखने का अवसर प्राप्त होता है, जिससे शिक्षा अधिक सुलभ और सुविधाजनक बन गई है। इस प्रणाली में निश्चित पाठ्यक्रम, समयबद्ध कक्षाएँ, मूल्यांकन पद्धति और परीक्षा प्रणाली शामिल होती है, जिससे शिक्षा में अनुशासन, स्पष्टता और एकरूपता आती है। हालांकि, कई बार यह देखा जाता है कि विद्यार्थी केवल परीक्षा उत्तीर्ण करने और अंक प्राप्त करने तक सीमित रह जाते हैं, जिसके कारण विषय की गहराई, अभ्यास की निरंतरता और रचनात्मकता पर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया जा पाता।

वर्तमान समय में तकनीकी और डिजिटल माध्यमों ने संगीत शिक्षा को और अधिक सुलभ, लचीला और प्रभावी बना दिया है। ऑनलाइन कक्षाएँ, वीडियो लेक्चर, ऑडियो-वीडियो रिकॉर्डिंग, मोबाइल एप्लिकेशन और डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से विद्यार्थी कहीं भी और कभी भी सीख सकते हैं। वे विभिन्न महान कलाकारों के प्रदर्शन को बार-बार सुनकर, देखकर और विश्लेषण करके अपनी समझ को और अधिक विकसित कर सकते हैं, जो पारंपरिक प्रणाली में सीमित रूप से ही संभव था। इसके अतिरिक्त, आधुनिक प्रणाली के कई महत्वपूर्ण लाभ भी हैं, जैसे—शिक्षा का व्यापक प्रसार, समय और स्थान की बाधाओं में कमी, विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसरों का सृजन, तथा भारतीय संगीत को वैश्विक स्तर पर पहचान और प्रतिष्ठा प्राप्त होना।

सीमाएँ

- व्यक्तिगत ध्यान की कमी के कारण विद्यार्थी की विशेष आवश्यकताओं पर ध्यान नहीं दिया जा पाता।
- अभ्यास (रियाज़) की निरंतरता कम हो जाती है।
- कई बार शिक्षा केवल सैद्धांतिक रह जाती है और व्यावहारिक पक्ष कमजोर हो जाता है।

4. परंपरा और आधुनिकता के बीच चुनौतियाँ

4.1 व्यक्तिगत मार्गदर्शन का अभाव

पारंपरिक गुरु-शिष्य परंपरा में गुरु प्रत्येक शिष्य की क्षमता, रुचि और कमियों को समझकर उसे व्यक्तिगत रूप से मार्गदर्शन देता था। यह प्रक्रिया अत्यंत गहन और प्रभावी होती थी, क्योंकि गुरु शिष्य के स्वभाव और उसकी प्रगति के अनुसार शिक्षण पद्धति अपनाता था। इसके विपरीत आधुनिक संस्थागत प्रणाली में एक शिक्षक को एक साथ अनेक विद्यार्थियों को पढ़ाना पड़ता है, जिससे प्रत्येक छात्र पर व्यक्तिगत ध्यान देना संभव नहीं हो पाता। परिणामस्वरूप कई विद्यार्थी अपनी वास्तविक क्षमता तक नहीं पहुँच पाते और उनका विकास अधूरा रह जाता है।

4.2 गहराई और गुणवत्ता में कमी

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में निर्धारित पाठ्यक्रम और समय-सीमा के भीतर विषय को पूरा करने का दबाव रहता है। इस कारण विद्यार्थियों को संगीत के सूक्ष्म पहलुओं—जैसे राग की गहराई, भाव-अभिव्यक्ति, और लय की जटिलताओं—को समझने का पर्याप्त अवसर नहीं मिल पाता। पारंपरिक

प्रणाली में जहाँ वर्षों तक एक ही विषय पर गहन अभ्यास कराया जाता था, वहीं आधुनिक प्रणाली में सतही ज्ञान पर अधिक जोर दिया जाता है। इससे संगीत की गुणवत्ता और उसकी आत्मा प्रभावित होती है।

4.3 व्यावसायीकरण की प्रवृत्ति

वर्तमान समय में संगीत को केवल साधना या कला के रूप में नहीं, बल्कि एक पेशे और आय के साधन के रूप में भी देखा जाने लगा है। इससे संगीत शिक्षा में व्यावसायिक दृष्टिकोण बढ़ा है, जहाँ कई बार गुणवत्ता की अपेक्षा लोकप्रियता और त्वरित सफलता को अधिक महत्व दिया जाता है। इस प्रवृत्ति के कारण विद्यार्थी गहन अभ्यास और दीर्घकालिक साधना से दूर होते जा रहे हैं, जिससे संगीत की मौलिकता और गंभीरता प्रभावित होती है।

4.4 सांस्कृतिक मूल्यों का क्षरण

गुरु-शिष्य परंपरा में गुरु के प्रति श्रद्धा, अनुशासन, समर्पण और आज्ञाकारिता जैसे मूल्य अत्यंत महत्वपूर्ण थे। ये मूल्य न केवल संगीत शिक्षा का हिस्सा थे, बल्कि शिष्य के व्यक्तित्व निर्माण में भी सहायक होते थे। आधुनिक प्रणाली में इन मूल्यों का महत्व धीरे-धीरे कम होता जा रहा है, क्योंकि शिक्षा अधिक औपचारिक और व्यावसायिक हो गई है। इससे संगीत के साथ जुड़ी सांस्कृतिक और नैतिक परंपराएँ कमजोर पड़ रही हैं, जो दीर्घकाल में संगीत की आत्मा को प्रभावित कर सकती हैं।

5. संतुलन की आवश्यकता और समाधान

5.1 समन्वित शिक्षण प्रणाली

ऐसी शिक्षण प्रणाली का विकास अत्यंत आवश्यक है जिसमें पारंपरिक संगीत शिक्षा की गहराई और आधुनिक शिक्षा की संरचना दोनों का संतुलित समावेश हो। पारंपरिक प्रणाली में जहाँ व्यक्तिगत मार्गदर्शन, निरंतर साधना और गुरु के साथ निकट संबंध पर बल दिया जाता है, वहीं आधुनिक प्रणाली में व्यवस्थित पाठ्यक्रम, समयबद्ध कक्षाएँ और मूल्यांकन की स्पष्ट व्यवस्था होती है। यदि इन दोनों के गुणों को एक साथ जोड़ा जाए, तो एक अधिक प्रभावी और संतुलित शिक्षण पद्धति विकसित की जा सकती है। उदाहरण के रूप में, संस्थानों में नियमित कक्षाओं के साथ-साथ छोटे समूहों या व्यक्तिगत स्तर पर प्रशिक्षण (मेंटोरिंग) की व्यवस्था की जा सकती है, जिससे प्रत्येक विद्यार्थी की क्षमता और आवश्यकता के अनुसार मार्गदर्शन संभव हो सके।

5.2 पाठ्यक्रम का पुनर्गठन

संगीत शिक्षा को तीन धाराओं में विभाजित किया जा सकता है—

मंच केंद्रित (कलाकार निर्माण हेतु): इस प्रकार की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को एक कुशल और आत्मविश्वासी कलाकार के रूप में तैयार करना होता है। इसमें विशेष रूप से गायन, वादन और मंच प्रस्तुति की कला पर ध्यान दिया जाता है। विद्यार्थियों को रागों की गहराई, आलाप, तान, भाव-अभिव्यक्ति और श्रोताओं के सामने प्रस्तुति देने की तकनीक सिखाई जाती है, ताकि वे मंच पर प्रभावशाली प्रदर्शन कर सकें।

व्यवसाय केंद्रित (रोजगार हेतु): इस प्रकार की शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों को संगीत के क्षेत्र में रोजगार के अवसर प्रदान करना होता है। इसमें संगीत शिक्षण, संगीत निर्देशन, रिकॉर्डिंग, संगीत उत्पादन, मीडिया और मनोरंजन उद्योग से जुड़े कौशल सिखाए जाते हैं। इससे विद्यार्थी संगीत को एक पेशे के रूप में अपनाकर आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकते हैं।

शोध केंद्रित (संगीतशास्त्र हेतु): इस प्रकार की शिक्षा का उद्देश्य संगीत के सैद्धांतिक और वैज्ञानिक पक्ष का गहन अध्ययन करना होता है। इसमें रागों की संरचना, इतिहास, विकास, विभिन्न घरानों की विशेषताएँ और संगीत के सिद्धांतों का विश्लेषण किया जाता है। यह शिक्षा उन विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त होती है जो संगीत में अनुसंधान, लेखन और शिक्षण के क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहते हैं।

5.3 तकनीक का संतुलित उपयोग

आधुनिक युग में तकनीक का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है, इसलिए संगीत शिक्षा में इसका उपयोग भी आवश्यक है। ऑनलाइन कक्षाएँ, रिकॉर्डिंग, डिजिटल नोटेशन और विभिन्न संगीत ऐप्स विद्यार्थियों के लिए उपयोगी साधन सिद्ध हो सकते हैं। हालांकि, यह ध्यान रखना आवश्यक है कि तकनीक केवल सहायक माध्यम के रूप में उपयोग की जाए, न कि पारंपरिक शिक्षण का पूर्ण विकल्प बन जाए। तकनीक के माध्यम से विद्यार्थी अपने अभ्यास को रिकॉर्ड कर सकते हैं, विभिन्न कलाकारों को सुन सकते हैं और अपनी त्रुटियों को सुधार सकते हैं। इस प्रकार, तकनीक का संतुलित उपयोग पारंपरिक मूल्यों को बनाए रखते हुए आधुनिक सुविधाओं का लाभ उठाने में सहायक हो सकता है।

5.4 गुरु-शिष्य परंपरा का पुनर्स्थापन

गुरु-शिष्य परंपरा भारतीय संगीत शिक्षा की आत्मा है, इसलिए इसका पुनर्स्थापन अत्यंत आवश्यक है। आधुनिक संस्थानों में इस परंपरा को पुनर्जीवित करने के लिए मेंटरशिप प्रणाली को अपनाया जा सकता है, जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी को एक गुरु या मार्गदर्शक से जोड़ा जाए। इससे विद्यार्थी को व्यक्तिगत मार्गदर्शन, प्रेरणा और निरंतर सुधार का अवसर मिलेगा। इसके अतिरिक्त, कार्यशालाओं, गुरुकुल शिविरों और विशेष

प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से भी इस परंपरा को सशक्त बनाया जा सकता है। इससे विद्यार्थियों में अनुशासन, समर्पण और संगीत के प्रति गहरी समझ विकसित होगी।

5.5 नई संभावनाओं का विकास

वर्तमान समय में संगीत शिक्षा को केवल पारंपरिक सीमाओं तक सीमित न रखकर उसे अन्य क्षेत्रों से जोड़ने की आवश्यकता है। संगीत चिकित्सा (Music Therapy), संगीत तकनीक (Music Technology), फिल्म और मीडिया संगीत, तथा शोध जैसे क्षेत्रों में अपार संभावनाएँ हैं। यदि विद्यार्थियों को इन क्षेत्रों की जानकारी और प्रशिक्षण दिया जाए, तो उनके लिए रोजगार और करियर के नए अवसर खुल सकते हैं। इसके साथ ही, अंतर्विषयक दृष्टिकोण अपनाकर संगीत को विज्ञान, मनोविज्ञान और तकनीक से जोड़ना भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है। इस प्रकार, नई संभावनाओं का विकास संगीत शिक्षा को अधिक प्रासंगिक, व्यावहारिक और भविष्य उन्मुख बना सकता है।

6. अनुसंधान पद्धति

प्रस्तुत शोध-पत्र में गुणात्मक (Qualitative) अनुसंधान पद्धति का उपयोग किया गया है। यह अध्ययन मुख्यतः पुस्तकों, शोध-पत्रों और सेमिनार लेखों और यू जी सी मान्य सभी विश्वविध्यालयों के पाठ्यक्रम पर आधारित है। इसमें वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए पारंपरिक (गुरु-शिष्य परंपरा) और आधुनिक संगीत शिक्षा प्रणाली का अध्ययन किया गया है।

साथ ही, दोनों पद्धतियों का तुलनात्मक विश्लेषण कर उनकी विशेषताओं, चुनौतियों और संभावनाओं का मूल्यांकन किया गया है, जिसके आधार पर संतुलन स्थापित करने के सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं।

7. निष्कर्ष

भारतीय संगीत शिक्षा में परंपरा और आधुनिकता दोनों का समान महत्व है। परंपरा हमें हमारी जड़ों से जोड़ती है और आधुनिकता हमें नए अवसर प्रदान करती है। यदि इन दोनों के बीच संतुलन स्थापित किया जाए, तो संगीत शिक्षा न केवल अधिक प्रभावी बन सकती है, बल्कि यह आने वाली पीढ़ियों के लिए भी प्रेरणादायक सिद्ध होगी। अतः आवश्यक है कि हम पारंपरिक मूल्यों को बनाए रखते हुए आधुनिक साधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करें।

संदर्भ

वसंत (1954). संगीत विशारद, संस्कार प्रकाशन, हाथरस.

चौधरी, स्वप्ना (1993). शोध प्रबंध हिंदुस्तानी संगीत में गायन के विभिन्न घराने का समीक्षात्मक अध्ययन, संगीत विभाग, इलाहाबाद विश्वविध्यालय, पृ. 1 – 10.

पलनिटकर, अलकनंदा (2017). शास्त्रीय संगीत शिक्षा: समस्याएँ एवं समाधान, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, ISBN 978-8188775941

चींचोरे, प्रभाकर नारायण (1966). भातखण्डे स्मृतिग्रंथ, इन्दिरा काला संगीत विश्वविध्यालय, खैरागढ़.

Higgins, Lee (2012) – Community Music: In Theory and in Practice, Oxford University Press

सभी यूजीसी मान्य विश्वविध्यालयों का पाठ्यक्रम, जैसे महाराजा सयाजीराव विश्वविध्यालय बड़ौदा, इन्दिरा काला संगीत विश्वविध्यालय, खैरागढ़, मुंबई विश्वविध्यालय इत्यादि

Nicholas Cook (1999) – "What is Musicology?", BBC Music Magazine, Vol. 7 (May 1999), pp. 31–33